ISSN No. 2349-7165

सूचना–संचार क्रान्ति और हिन्दी भाषा

डॉ. ममता गोखे
सहायक प्राध्यापक
आई. पी. एस कॉलेज, इन्दौर
मोबाईल नं. 9575308700

ABSTRACT

सूचना क्रान्ति के इस युग में सूचना तकनीक का जिस तरह से व्यापक विकास हुआ है , उससे आशय है कम्प्यूटर और संचार तकनीकों का समन्वय । सूचना तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों ने समय और स्थान की दूरी को लगभग खत्म कर दिया है । कोई भी समाचार कुछ ही क्षण में एक कोने से दूसरे कोने तक आसानी से पहूँच जाता है । पल – पल की गतिविधियाँ और घटनाऐं दूरदर्शन पर ऐसी लगती है जैसे अपने घरों में ही घटित हो रही है । संचार क्रान्ति के कारण सूचना संजाल और नेटवर्क का उपयोग सम्पूर्ण संचार व्यवस्था के लिये किया जा रहा है । अब इन सूचनाओं का प्रसारण इलेक्ट्रानिक माध्यमों से शीघ्रता से हो रहा है । सूचना प्रौघोगिकी के विकास ने एक नई संचार क्रांति कर दी है । किसी भी समाज की उन्नत गतिविधियों का मुख्य आधार सूचना और संचार है । सूचना प्रौघोगिकी के उपकरणों में मुख्य रुप से रेडियो , टेलीविजन , कम्प्यूटर , सेटेलाइट तथा मोबाईल का महत्वपूर्ण स्थान है । परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आज मीडिया संसार को बदल रहा है । अगर कहा जाये कि यह मीडिया की सदी है जो कोई अतिशयोक्ति नही होगी । संचार क्रांति ने जिस सूचना – संसार को जन्म दिया है , वह जन माध्यम के रुप में मानवीय मूल्यों के नये मानकों को निर्धारित कर रहा है ।

जनसंचार माध्यम ही सूचना प्रौघोगिकी के प्रतिनिधि है । इस प्रकार देखने से सूचना प्रौघोगिकी के दो भाग सूचना एवं प्रौघोगिकी है । परन्तु हमारे देश के परिप्रेक्ष्य में तीसरा भाग है ''भाषा'' । भाषा सूचना प्रौघोगिकी का ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है कि इसे सूचना प्रौघोगिकी का 'मुखपृष्ठ' कहा जा सकता है । भाषा के द्वारा ही सूचनाऐं तैयार करने और भेजने का कार्य होता है । सूचना प्रौघोगिकी की 80 प्रतिशत उपयोग में आने वाली सामाग्री अंग्रेजी में है , इसलिये जो देश अंग्रेजी भाषी है , वहाँ कोई समस्या नही है । कठिनाई वहां है जहाँ अंग्रजी भाषा नहीं है और जो अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करते है । भाषाविद् डॉ. सूरजभान सिंह के शब्दों में ''जिन देशों की मातृभाषा अंग्रेजी है , उनके लिए भाषा का घटक महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन भारत जैसे देश में जहाँ अंग्रेजी समझने वालों की संख्या मात्र पाँच प्रतिशत है और जहाँ 18 प्रमुख मान्यता प्राप्त भाषाऐं है । भाषा का घटक कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है । ऐसे विशाल समुदाय के लिए उन्ही को भाषा में सूचना उपलब्ध कराया अपने आपमें एक काफी बड़ा दायित्व है ।

प्रस्तावना

गति ही जीवन है और जड़ता मृत्यु है। चलने, दौड़ने, आगे–बढ़ने और व्यापक होने के अर्थ में 'संचार' शब्द का प्रयोग होता है ''संचार संस्कृत के 'चर' धातु से बना है जिसका अर्थ है चलना''।1 जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाते हैं या उसका प्रचार करते हैं तो वही सूचना–संचार कहलाता है ।

'सूचना अंग्रेजी के प्दवितउंजपवद का हिन्दी रूपांतरण है, जिसका अर्थ है, सूचित करना अर्थात वह बात जो किसी व्यक्ति को किसी विषय के ज्ञान के लिए कही जाएँ । लेकिन जब सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत इसका प्रयोग करते है, तब यह एक पारिभाषिक–शब्द होता है । विज्ञान का व्यवहारिक रूप प्रौद्योगिकी है । आज मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रौद्योगिक आभा–मण्डल में है । प्रौद्योगिकी की शक्ति से सम्पन्न मानव अपने जीवन को लगातार उत्कृष्ठता के नवीन आयात दे रहा है । सूचना –संचार क्रान्ति ने पूरी दुनिया ही बदल दी है । शताब्दी की इस महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी घटना ने दुनिया को 'विश्वग्राम' में परिवर्तित कर दिया है ।

सूचना–संचार का महत्व

''संचार (Communication) से अभिप्राय है एक ऐसा प्रयास जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों एवं मनोवृत्तियों में सहभागी होता है । वे समस्त विधियॉ 'संचार' हैं जिनके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे को प्रभावित करता है । अभिव्यक्ति के उन सभी रूपों को संचार कहते हैं जो पारस्परिक समझदारी के उद्देश्य की पूर्ति करते है।

संचार मनुष्य , समाज एवं राष्ट्र के लिये ऐसी आवश्यकता है कि इसके बिना रहना संभव नही है । पीटर लीटल के शब्दों में ''संचार एक ऐसी प्रक्रिया है , जिसके माध्यम से 'सूचना' व्यक्तियों या संगठनों के बीच संप्रेषित की जाती है , ताकि समझ में वृद्धि हो ।''2 ए. बी. शनमुगन के अनुसार ''ज्ञान , अनुभव, संवेदना , विचार और यहॉ तक कि अस्तित्व में होने वाले अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार है ।''3 कहा जा सकता है कि सूचना–संचार के अभाव में मानव समाज की संचालन प्रक्रिया संभव नही हो सकती है । आज के युग में सूचना एक शक्तिशाली औजार है । जिस व्यक्ति, समाज या राष्ट्र का सूचना फलक जितना विशाल होगा , वह उतना ही शक्ति सम्पन्न और उन्नत माना जाता है । इस तरह सूचना और संचार परस्पर संबंधित है । बिना 'सूचना' के संचार और बिना 'संचार' के सूचना अपूर्ण है । आज कोई भी सूचना अपने वास्तिविक रुप में ज्यों की त्यों दूसरो तक भेजी जा सके , तभी उस 'संचार' की विश्वसनीयता है । जो संचार माध्यम इस सूचना को तोड़–मरोड़कर मनमाने तरीके से परिवर्तित कर देते है , वे विश्वसनीय कदापि नहीं हो सकते है । ज्ञान के समान 'सूचना' भी विकास की राह में आने वाली बाधाओं को दूर करने का माध्यम है । सूचना हमें इन बाधाओं को लडने की शक्ति व क्षमता प्रदान करती है ।

सूचना व संचार एक सहज और मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्ति है । जिस प्रकार शरीर मे रक्त संचार द्वारा संतुलित एवं स्वस्थ जीवन जीना संभव होता है उसी प्रकार व्यक्ति और समाज के अस्तित्वान होने में सूचना व संचार की भूमिका असंदिग्ध है । कुछ 'विद्वान' संचार शब्द को भाषा सम्प्रेष्ण से जोड़ते है तो कुछ विद्वानों की मान्यता है कि अनुभवों के बॉटने की यह एक क्रिया है। व्यापक दृष्टि से देखने पर संचार एक व्यवहारिक विज्ञान के तौर पर परिलक्षित होता है । मनुष्य के अलावा पशु–पक्षियों एवं पेड़ – पौधों में भी संचार की स्थिति देखी जा सकती है । एक अकेले पौधों को भले ही कितनी ही सही खुराक व समय पर पानी दिया जाए वह समूह में रखे पौधों से सदा ही कमजोर रहेगा । अतएव संचार को विज्ञान , कला एवं एक महत्वपूर्ण जीवन की आवश्यकता के रुप में स्वीकार किया जा सकता है ।

सूचना–संचार व भाषा में समन्वय

सूचना क्रान्ति के इस युग में सूचना तकनीक का जिस तरह से व्यापक विकास हुआ है , उससे आशय है कम्प्यूटर और संचार तकनीकों का समन्वय । सूचना तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों ने समय और स्थान की दूरी को लगभग खत्म कर दिया है । कोई भी समाचार कुछ ही क्षण में एक कोने से दूसरे कोने तक आसानी से पहूँच जाता है । पल – पल की गतिविधियाँ और घटनाऐं दूरदर्शन पर ऐसी लगती है जैसे अपने घरों में ही घटित हो रही है । संचार क्रान्ति के कारण सूचना संजाल और नेटवर्क का उपयोग सम्पूर्ण संचार व्यवस्था के लिये किया जा रहा है । अब इन सूचनाओं का प्रसारण इलेक्ट्रानिक माध्यमों से शीघ्रता से हो रहा है । सूचना प्रौघोगिकी के विकास ने एक नई संचार क्रांति कर दी है । किसी भी समाज की उन्नत गतिविधियों का मुख्य आधार सूचना और संचार है । सूचना प्रौघोगिकी के उपकरणों में मुख्य रुप से रेडियो , टेलीविजन , कम्प्यूटर , सेटेलाइट तथा मोबाईल का महत्वपूर्ण स्थान है । परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आज मीडिया संसार को बदल रहा है । अगर कहा जाये कि यह मीडिया की सदी है जो कोई अतिशयोक्ति नही होगी । संचार क्रांति ने जिस सूचना – संसार को जन्म दिया है , वह जन माध्यम के रुप में मानवीय मूल्यों के नये मानकों को निर्धारित कर रहा है ।

मानव सभ्यता के आरंभ से अब तक हुए विकास और जीवन स्तर के सुधार में सूचना की सदैव एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है । वर्तमान में 'सूचना' विकास और प्रगति के साथ ऐसी जुड़ी हुई है कि इसका प्रभाव अनेक क्षेत्रों में दिखाई देता है । पहले जहॉ जन संचार समाज और राष्ट्र तक सीमित था , अब उसका क्षेत्र विस्तार अंतर्राष्ट्रीय हो गया है । सूचना – संचार से एक ऐसी स्थिति निर्मित हुई है , जिससे समाज में व्याप्त भेदभाव की दीवारें ढहने लगी है । आधुनिक विश्व के हर व्यक्ति को सूचना प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है । प्रौघोगिक विकास के साथ – साथ विज्ञान निरंतर संचार माध्यम प्रदान करता जा रहा है । व्यक्ति अपने जरुरतों के अनुसार इनका उपयोग कर लेता है । जीवन की उन्नति का आधार 'ज्ञान' और ज्ञान का आधार 'सूचना' है । ये दोनों मिलकर मनुष्य तथा समाज की दिशा निर्धारित करते है और इन दोनों को 'संचार' ही प्रभावपूर्ण बनाता है ।

सूचना प्रौघोगिकी और आधुनिक संचार क्रांति के इस युग में हमें यह निश्चित करना ही होगा कि हमारे देश की एकता और अखण्डता के लिए एक सम्पर्क भाषा अतिआश्यक है और वह केवल हिन्दी ही हो सकती है । देवनगरी एक वैज्ञानिक लिपि है और इस लिपि में कम्प्यूटर में कार्य किया जा सकता है आज हिन्दी के सामने जो चुनौतियाँ है , वह उनका सामना करने में समर्थ होती जा रही है । खडी बोली का मानक रुप आधुनिक हिन्दी के रुप में प्रचलित है । आधुनिक सूचना प्रौघोगिकी के इस युग में तमाम चुनौतियों के बाद भी हिन्दी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान अपनी भाषाई क्षमता से बनाया है और अप्रवासी भारतीयों के कारण इसका एक अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप भी निर्मित हो गया है । नागरी लिपि और हिन्दी का प्रयोग ये दोनो आधुनिक संचार माध्यमों में हमारी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ है । आजादी के पूर्व अंग्रेजी हमारे देश में शासकों की भाषा थी , बाद में वह नौकरशाहों की भाषा हो गई और आज इसका मुख्य कारण हमारी दुर्बल

मानसिकता ही है । हमारी इस दुर्बल मानसिकता के साथ विकास की गति अत्यन्त धीमी है । भारतेन्दु हरिशचन्द्र की इन पंक्तियों ये यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

''निज भाषा उन्नति अैह सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटेन हिय को शूल'' ।4

अतः व्यक्ति विशेष को चाहिए कि वह अपना विकास तो करें किन्तु अपनी पहचान अपनी हिन्दी भाषा को न छोड़े एवं संचार माध्यमों पर भी दायित्व है कि वह हिन्दी भाषा को आधुनिकीकरण के लिए उपयोगी बनाए एवं भारत देश के अस्तित्व को दुनिया में बनाए रखे । हिन्दी भाषा की पहचान बनाए रखे वरना हमारा अस्तित्व ही नहीं रहेगा जब हिन्दी भाषा ही नहीं रहेगी तब हम अपने को हिन्दुस्तानी कैसे कहेगें अपनी भावी पीढ़ी को कौन से मूल्य देगें उसकी क्या संस्कृति होगी ।

संचार क्रान्ति और हिन्दीभाषा का इतिहास बहुत पुराना है । संचार क्रान्ति और हिन्दीभाषा का संबंध प्राचीनकाल से आधुनिक तक अविरल गति से प्रवाहमान है । संचार क्रान्ति का विकास प्राचीन समय में भोज पत्रों, तामपत्रों, पेड़ों के पत्रों तथा पत्थरों पर खुदाई, कबूतरों आदि राजाओं द्वारा प्रजा तक पहुॅचाया जाता था, लेकिन आधुनिक काम में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से यह संचार पलभर में साकार हो गया है । आज से कुछ वर्ष पूर्व जहां प्रेस का मतलब था केवल समाचार पत्र–पत्रिकायें पुस्तकें वहीं आज समाचार–पत्रों, इलेक्ट्रानिक संस्करण उपलब्ध होने लगे हैं ।

संचार मानव के साथ एक–दूसरे के साथ अनगिनत तरीकों में सम्पर्क कर न केवल शब्द और संगीत चित्र, प्रेस; सिर हिलाना और संकेत करना या मनःस्थिति द्वारा बल्कि ऐसी किसी भी हरकत द्वारा जो किसी का ध्यान आकृष्ट करे या ऐसी भी कोई ध्वनि जो किसी दूसरे के मन में प्रति ध्वनित हो, विचार का प्रसार करनी है आज का व्यक्ति संचार के साधनों पर ही निर्भर है ।5

हिन्दी भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्ष से मिलती है । हिन्दी भाषा का उद्‌भव अपभ्रंश शब्द से हुआ है । हिन्दी भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन भाषा है । वर्तमान युग में कम्प्यूटर में देवनागरी लिपि में हिन्दी भाषा के सॉफ्टवेयर का विकास हो गया है । वर्तमान परिपेक्ष्य में समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकें आदि मुद्रण कम्प्यूटर के माध्यम से देवनागरी लिपि में होने लगता है । आज वेबसाइड के माध्यम से समाचार पत्र–पत्रिकाओं, सिनेमा, रेड़ियों, टेप–रिकार्डर आदि में लोक लुभावने विज्ञापनों में हिन्दी भाषा का तेजी से विस्तार होने लगा है ।

आज ग्लोबलाइजेशन हर किसी की आवश्यकता बन गया है । आधुनिकीकरण में एक–दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लग गयी है । चाहे उसके लिए हमें अपने मूल्यों को ही क्यों ना छोड़ना पड़े, भाषा को छोड़ना पड़े । आज सोचने की आवश्यकता है ऐसा क्यों क्या आधुनिकीकरण हम अपनी भाषा व संस्कृति को बनाए रखकर नहीं कर सकते ये इतना मुश्किल भी तो नहीं होगा । मूल्य, भाषा और संस्कृति ही हमारी पहचान है जिसके कारण आज हम दुनिया के विकसित एवं विकासशील देशों के साथ है लेकिन आज अलग–अलग राष्ट्र की मांग एवं अलग–अलग भाषा की मांग की जाने लगी है । क्या ऐसा करने से हम अपनी स्वतंत्रता स्वयं ही छीन लेने की तैयारी में है हिन्दी में बात करना कार्य करना तो हम शुरू करें इसी हिन्दी ने हमें अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने एवं हमें स्वतंत्र करने में हमारी सहायता की है तो क्या हम इसी हिन्दी के बल पर आधुनिकीकरण नहीं कर सकते, एक सर्वे के अनुसार हिंदी भाषा का तृतीय स्थान है यह अंग्रेजी एवं चीनी के बाद तीसरी भाषा है ।6 यानी हिन्दी भाषा का महत्व भी अंग्रेजी एवं अन्य भाषा के तुल्य है । सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस दौर में संचार माध्यमों चूंकि संचार का जाल पूरी दुनिया में है इसने सभी लोगों एवं देशों के बीच की दूरियॉ कम कर दी है । अतः संचार माध्यम जोकि प्रत्येक घर में पहुॅचाकर उसके महत्व को बढ़ावा दे रहे है। लेकिन आधुनिकीकरण में वे हिन्दी भाषा को भूल रहे है ।

उपसंहार

जनसंचार माध्यम ही सूचना प्रौद्योगिकी के प्रतिनिधि है । इस प्रकार देखने से सूचना प्रौद्योगिकी के दो भाग सूचना एवं प्रौद्योगिकी है । परन्तु हमारे देश के परिप्रेक्ष्य में तीसरा भाग है 'भाषा' ।7 सूचना प्रौद्योगिकी की 80 प्रतिशत उपयोग में आने वाली सामग्री अंग्रेजी में है । इसलिये जो देश अंग्रेजी भाषी है, वहां कोई समस्या नहीं है । कठिनाई वहां है, जहां अंग्रेजी भाषा नहीं है और जो अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करते है भाषाविद् डॉ. सूरज भानसिंह के शब्दों में जिन देशों की मातृभाषा अंग्रेजी है, उनके लिए भाषा का घटक महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन भारत जैसे देश में जहां अंग्रेजी समझने वालों की संख्या मात्र 5 प्रतिशत है और जहां 18 प्रमुख मान्यता प्राप्त भाषाऐं है । भाषा का घटक कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है ऐसे विशाल समुदाय के लिए उन्हीं की भाषा में सूचना उपलब्ध कराना अपने आपमें एक काफी बड़ा दायित्व है ।8

विचारणीय प्रश्न यह है कि इन चुनौतियों का समाधान क्या है ?समाधान यही हो सकता है कि देश के लिये अगर एक सम्पर्क भाषा की नीति हो और सूचना प्रौघोगिकी का उपयोग माना समाज के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए सही हाथों में व्यवस्थित एक आचार संहिता का पालन करते हुए किया जाये ।

संदर्भ –

1.	सम्प्रेषण एवं संचार साधन – प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल	पृष्ठ.08
2.	हिन्दी विज्ञान पत्रकारिता – डॉ. मनोज पटेरिया	पृष्ठ.172
3.	संचार और फोटो पत्रकारिता – डॉ. रमेश मेहरा	पृष्ठ.33 व 37
4.	प्रयोजन मूलक, हिन्दी की नई भूमिका– – डॉ. कैलाशनाथ पाण्डे	पृष्ठ.332
5.	पत्रकारिता एवं जनसंचार – एन.सी.पंत; मनीषा द्विवेदी	पृष्ठ.70
6.	सूचना क्रान्ति और विश्वभावा हिन्दी – डॉ. हरिमोहन	पृष्ठ.23 व 24
7.	आधुनिक संचार और हिन्दी – डॉ. हरिमोहन	पृष्ठ.155
8.	हिन्दी पत्रकारिता सिद्वांत और स्वरूप – सविता चट्ठा	पृष्ठ.23